

सिरमौर जनपद का लोक संगीत

Dr. Nirja Kumari

Assistant Professor Music (Vocal), Govt Degree College Kandaghat, Solan (HP)



Read the Article Online



Published on 26.09.2026

सारांश

हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जनपद एक प्राचीन सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जनपद है, जिसने लोक साहित्य तथा लोक संगीत की समृद्ध परम्परा को सहेज कर रखा है। प्रस्तुत शोध-पत्र में सिरमौरी लोकगीतों का वर्गीकरण निबद्ध (ताल युक्त) तथा अनिबद्ध (ताल रहित) शैली के आधार पर किया गया है। निबद्ध शैली को विलम्बित, मध्य तथा द्रुत लय के अन्तर्गत ढीली नाटी, गीह अथवा मुंजरा तथा रासा ताल के उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि सिरमौर के लोक संगीत में पाँच तालियों की विशिष्ट वादन क्रिया, लोक वाद्यों का प्रयोग तथा शास्त्रीय रागों की छाया स्पष्ट रूप से विद्यमान है। यह भी निष्कर्ष निकलता है कि इस जनपद की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए इसके संरक्षण के प्रयास आवश्यक हैं।

कुंजी शब्द: सिरमौर, लोक संगीत, लोकगीत, निबद्ध, अनिबद्ध, गीह, मुंजरा, हारुल, भूरी गीत, लोक ताल, लोक वाद्य

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश एक विस्तृत भूखण्ड है जिसे बारह जिलों में बांटा गया है। इन सभी जिलों की भाषा अथवा बोली, लोक साहित्य, लोक संस्कृति तथा लोक संगीत में विभिन्नताएं दृष्टिगोचर होती हैं। चूड़धार शिखर के आंचल में बसे सिरमौर जनपद की सुरम्य वादियों में जनजीवन का उपकार करती गिरि, जलाल और टोंस (तमसा) एवं यमुना नदियां इसके छोरों को स्पर्श करती प्रवाहित होती हैं। शिरगुल महाराज मन्दिर चूड़धार एवम् मूल स्थान शायी में, माँ रेणुका की पावन स्थली ददाहू में, माँ काली मन्दिर नाहन में, माता बाला सुन्दरी शक्ति पीठ त्रिलोकपुर में, पाँवटा साहब में गुरुद्वारा क्षेत्र वासियों की श्रद्धा एवं आस्था के पावन स्थल हैं। सैणधार, धारटीधार, हरिपुरधार, पीड़ियाधार, नौहराधार, बधाऊधार आदि अनेक धारों की रमणीय आकृतियों की छटा बिखेरता सिरमौर जनपद पर्यटन की दृष्टि से भी किसी से कम नहीं। सिरमौर एक प्राचीन सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जनपद होने के कारण लोक साहित्य तथा लोक संगीत की समृद्ध विशिष्टता धारण किए हुए है। लोक संगीत को अलग-अलग विद्वानों ने अपने-अपने अनुभवों द्वारा परिभाषित किया है। लोक संगीत का 'लोक' शब्द अंग्रेजी के Folk का पर्याय माना जाता है।

शोध का उद्देश्य और पद्धति

इस शोध-पत्र का उद्देश्य सिरमौर जनपद के लोक संगीत के स्वरूप, उसके लोकगीतों, लोक तालों और लोक वाद्यों का परिचय देना तथा उसकी विशिष्टताओं को उजागर करना है। अध्ययन में विवरणात्मक पद्धति अपनाई गई है तथा लोकगीतों एवं लोक तालों के वर्ग विभाजन के आधार पर सामग्री प्रस्तुत की गई है।

लोक संगीत का स्वरूप और महत्त्व

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च । मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

सृष्टि के असीम रहस्य में सत्यं सुन्दरम् शिवं की जो भावमयी सत्ता आभासित होती है उसी को स्वर देने की चेष्टा संगीत है। ऐसी महान कला जिसके आगे भगवान ने ऋषि-मुनियों की पूजा भक्ति, साधना को छोड़कर संगीतमय आह्वान की पुकार सुनी। देवताओं, ऋषि-मुनियों और मानव ने जिस संगीत की साधना करके परमानन्द प्राप्ति का मार्ग बनाया, जिस कला के माध्यम से सिद्ध योगियों ने मोक्ष प्राप्त किया, जो विश्व के कण-कण में स्वयं भगवान के अंश की भांति विद्यमान हो, ब्रह्मांड के प्रत्येक अणु-परमाणु में व्याप्त है। वह संगीत महान है, अपूर्व है। प्राचीन काल से ही मानव का प्रकृति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहने के कारण उसकी हर क्रिया प्राकृतिक थी, वह प्रत्येक परिस्थिति में प्रकृति को ही देखा करता था। वही प्रभाव उसके संगीत पर भी था। इसीलिए लोक संगीत को प्राकृत संगीत भी कहा गया है। सुप्रसिद्ध संगीतकार रवीन्द्र जैन ने सुन्दर पंक्तियों में संगीत की महत्ता पर प्रकाश डाला है:-

प्रकृति के कण-कण में संगीत

हमारे देश में संगीत की मुख्यतः दो शाखाएं हैं, पहली शास्त्रीय संगीत और दूसरी लोक संगीत। लोकगीतों का उद्गम स्थल लोक मानस है जबकि शास्त्रीय संगीत मानव के बौद्धिक विकास से उपजा बन्धन युक्त संगीत है। सर्वविदित है कि शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति लोक संगीत से हुई है। शास्त्रीय

संगीत के अन्तर्गत राग निर्माण में लोक संगीत की अहम भूमिका रही है। लोकगीतों की धुनों में अनेक रागों में शास्त्रीयता के अंश विद्यमान रहते हैं। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि शास्त्रीय संगीत का मूलाधार लोक संगीत ही है। क्षेत्र विशेष का अपना लोकाचार होता है। अर्थात् इसकी मान्यताएं, रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, परम्पराएं, धारणाएं और पर्व एवं उत्सव होते हैं। इसी लोक संस्कृति के परिचायक सिरमौर जनपद की सांस्कृतिक धरोहर लोकवाणी के पथ पर सहस्रधार होकर निरन्तर प्रवाहित हो रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी प्रकार की घटनाओं, प्रेम, करुणा, हास-परिहास, रुदन, युद्ध, देवकार्य, बलिदान और त्याग के परिचायक लोक गीत अथवा लोकगाथाएं यहां लोक सर्जक के हृदय उद्गारों से स्वतः फूट पड़ते हैं जिसके फलस्वरूप यहाँ का लोक जीवन झूम उठता है। इसके अपने अलंकार, मुहावरे, लोकोक्तियां तथा शब्द हैं जो जन मानस की मधुर स्वर लहरियों के माध्यम से प्रस्फुटित होते हैं।

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते ।

अर्थात् गायन, वादन और नृत्य की त्रिवेणी में संगीत विद्यमान है, ये सभी अन्योन्याश्रित हैं। वादन गायन की तथा नृत्य वादन का अनुगामी है। भाव-भंगिमाओं तथा अंग प्रदर्शन के माध्यम से चित्त की अभिव्यक्ति द्वारा मन के संदेश को मानस पटल तक पहुँचाने की कला नृत्य कहलाती है। प्रस्तुत विषय को अधिक विस्तृत रूप देने की अपेक्षा यहां पर लोक संगीत के गायन पक्ष को ही लिया जा रहा है, वादन पक्ष उसके साथ संयुक्त रखने का प्रयास किया गया है। सिरमौरी लोकगीतों का सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व है। इन गीतों में परंपरागत विभिन्न सम्बन्धों के व्यावहारिक रूपों के दर्शन होते हैं। ये लोकगीत स्थानीय लोकमानसी चिन्तन धरातल के स्वच्छन्द तथा उज्ज्वल दर्पण हैं जिनका प्रतिबिम्ब यहाँ की लोक संस्कृति के पक्ष में लोकगीतों तथा लोक तालों के वर्ग विभाजन के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है। लोकगीतों में भी शास्त्रीय संगीत की भांति निबद्ध (तालयुक्त) तथा अनिबद्ध (ताल रहित) प्रकार विद्यमान हैं। प्रथम चरण में निबद्ध शैली के लोक गीतों को प्रस्तुत किया जा रहा है। यहाँ यह भी स्पष्ट करना सर्वथा समुचित होगा कि सिरमौरी लोक गीत / लोक गाथाएँ लय के तीन रूपों विलम्बित, मध्य और द्रुत लय में बंधी रहती हैं।

सिरमौर के लोक संगीत की विशिष्टताएं

सिरमौर जनपद के लोक संगीत के परिप्रेक्ष्य में झाँकते हुए प्रतीत होता है कि यहाँ के संगीत में कुछ ऐसी विशिष्टताएँ हैं जो प्रदेश के अन्य जनपदों से समानता रखते हुए भी अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। उदाहरणतः नाटी ताल (गीह अथवा मुंजरा) शिमला, सोलन, सिरमौर तथा मंडी और कुल्लू के शिमला जिला के सीमावर्ती क्षेत्रों से जुड़ा है, सिरमौरी वादन क्रिया से मेल नहीं खाता है भले ही उपर्युक्त ताल ४ मात्राओं में बंधा हो परन्तु पाँच तालियों का हाथ द्वारा प्रदर्शन सिरमौरी वादन क्रिया को एक भिन्न रूप प्रदान करता है। इसकी विशेषता यह है कि गीह अथवा मुंजरा लोकगीतों का आरम्भ सम से आधी मात्रा के बाद होता है अर्थात् गीह ताल का सम ढका रहता है। कुछेक लोक गीत साढ़े छः मात्रा के पश्चात मुखड़े के रूप में आरम्भ किए जाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ये सभी क्रियाएँ लोकगायकों अथवा लोकवादकों द्वारा सहजता के साथ निभाई जाती हैं।

लोक तालों के विभिन्न प्रकारों में विभिन्न लय का समावेश दिखाई देता है यथा:- तीन मात्रिक, चार मात्रिक, छः मात्रिक, सात मात्रिक, बारह मात्रिक, चौदह मात्रिक, सोलह तथा अट्ठाईस मात्रिकादि। सोलह मात्रिक बिलम्बित लय में गाए जाने वाले लोकगीत (ढीली नाटी) सिरमौर के ट्रांसगिरि क्षेत्र के अन्तर्गत राजगढ़ तहसील में सुने जा सकते हैं जबकि लोकगीतों के अन्य प्रकार समूचे क्षेत्र में गाए जाते हैं। यहाँ के लोकवाद्यों के अन्तर्गत ताल वाद्यों में ढोल (लकड़ी अथवा तांबे का), नगारा-दमामा, घड़ा, खंजरी, ढुङ्क, ढाकुली तथा फूँक वाद्यों में शहनाई, बीन, बाँसुरी, करनाल तथा रणसिंगा आदि का प्रयोग किया जाता है। ये यहाँ के प्राचीन वाद्य यन्त्र हैं जिनका प्रयोग दोनों विधाओं गायन तथा नृत्य के साथ कुशलता पूर्वक किया जाता है। लोकगीतों का कम से कम एक सप्तकीय प्रयोग अपनी अलग पहचान बनाए रखता है। इसके साथ-साथ स्वरों का न्यास जो विशेषकर भूरी गीतों में सुना जा सकता है वह भी मन को अति गहरी आनन्दमयी अनुभूति करा देता है। शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त किए जाने वाले खमाज, काफी, भीमपलासी, पहाड़ी, भूपाली, जैजैवन्ती, गारा तथा भैरवी आदि रागों की छाया यहाँ गाए जाने वाले लोकगीतों में स्पष्ट झलकती है।

सिरमौरी लोकगीतों में सांगीतिक तत्वों की बहुलता इस तथ्य को स्पष्ट कर देती है कि यहाँ का लोक संगीत अति प्राचीन है और इसी की नींव पर शास्त्रीय संगीत का भवन अवस्थित है। यहाँ के लोक संगीत में सप्तक-प्रयोग, मन्द्रता, तारता, आरोहावरोह तथा न्यास प्रक्रिया आदि का यथोचित एवम् अनायास प्रयोग एक विशिष्ट परम्परा का उद्घाटन करता है। हारुल (लोक गाथाएं) गायन में 'सामा-दोलतू की हार', 'नेगी नोतराम की हार',

'होक् मिया की हार' तथा 'कीरचन्द' की हार इत्यादि शौर्य-गीत हैं। इनके योद्धा इस जनपद के महान नायक रहे हैं जिन्होंने रियासती काल में जनता की भलाई के लिए राजाओं से टक्कर ली। 'पवाड़ी झांखो-अजबा' में झांखो नामक महिला के सतीत्व का वर्णन है। 'भिऊरी' नामक लोकगीत इस जनपद की एक कारुणिक गाथा है जिसे दीपावली के अगले दिन महिलाओं द्वारा गाया जाता है।

निबद्ध शैली के लोकगीत

बिलम्बित लय

लय के इस प्रकार को ढीली नाटी के रूप में भी जाना जाता है। 16 मात्रिक ताल को ढोल तथा नगारा आदि वाद्यों पर हाथ से या छड़ी की सहायता से बजाया जाता है जिसके बोल कुछ इस प्रकार सुने जा सकते हैं:-

धा धा धा गिना धा गिना धा ५ । ता ता ता गिना धा गिना धा ५

उपर्युक्त ताल के अन्तर्गत ढोली जा मेरे हिमुआ, किन्दी मरचिए चाली वे दाड़िए इत्यादि लोकगीतों के प्रकार सुने जा सकते हैं। इन लोकगीतों के साथ ताल वादक विभिन्न प्रकार की परनों व तिहाइयों का कुशल वादन करते हैं। वस्तुतः ये गीत शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त स्वर-ताल की भांति शास्त्रीय पक्ष को अधिक उजागर करते दिखाई देते हैं।

मध्य लय

लय के इस प्रकार में 'गीह' अथवा 'मुंजरा' के साथ आठ मात्रिक ताल बजाई जाती है। इस ताल में देव स्तुति गीत, 'मुंजरा' अथवा 'गीह' गीत, समस्त प्रणय गीत, हारुल (वीर गाथाएं) आदि बंधे रहते हैं। इन गीतों के साथ प्रायः नृत्य भी किया जाता है परन्तु कभी-कभी विरह गीतों में गायन का एकल स्वर भी देखा जाता है। बहुचर्चित अथवा जनपदीय प्रतिनिधि लोक गीतों की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं:-

तेरे मुओं दा तिला हाय रे बेसो सुबदा ।

कुटी लोए चेवेड़े लाए लोए फाके रे मामा ।

तोएं तो शिखा स्थणा, बुरा शिखा रुशणा ।

पाणी रा सोसो रे चानणा, नालेट से झालेट ।

ऐसी मुंजरे जोगी जवाना वे छेड़ चोजों से गोरखीए ।

'हारुल' गीत, आंशिक महाभारत (पंडवायण), रामायण के आंशिक सन्दर्भ गीत इत्यादि के साथ भी 8 मात्रिक ताल बजाने की परम्परा है। 'मुंजरा' अथवा 'गीह' ताल के बोल इस प्रकार सुने जा सकते हैं:-

धाधिं धिं ता । धिं तक । धिं तक । तिरकिट तिरकिट

विवाह गीतों तथा धार्मिक लोक भजनों के साथ कहरवा ताल बजाने की भी परम्परा रही है।

'गीह' अथवा 'मुंजरा' ताल में पाँच तालियों को हाथ पर बजाने की क्रिया अत्यन्त क्लिष्टता का रूप धारण किए हुए है। गीत गाते हुए साथ-साथ ताली बजाने की क्रिया स्थानीय लोक मानस के लिए एक सहज अथवा अनायास रूप में प्रयुक्त की जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो ४ मात्रिक ताल में पाँच ताली को बजाने की कला जन साधारण की रगों में समाई हुई है।

द्रुत लय

द्रुत लय के अन्तर्गत 12 मात्रिक ताल जिसे स्थानीय बोली में रासा ताल अथवा 'तावली नाटी ताल' के नाम से भी जाना जाता है। इसके बोल इस प्रकार हैं:-

धा गिना धा गिना धा गिना धा तिर किट

रासा गीत, हारुल (वीर गाथा गीत) तथा अन्य उत्सव विशेष लोकगीतों के साथ उपर्युक्त ताल को बजाया जाता है।

गिरियो । पाणी रे बेंथुए शुको राजया ।

(मोण गीत) दोईए दवांगलो रे दोइए बाणा गोणी रे ।

मेरे मोणे आया रे दादा रोय आड़ा होजु रे ।

घुबबुआ रे हे कलिए जुगा छुबहुआ रे ।

इसी प्रकार फुलणिया, जंग ताल, धरेवणी, चौघड़ी, जागरा, गुड़ाई ताल इत्यादि में 12 मात्रिक द्रुत लय की ताल का वादन किया जाता है। विवाहोत्सव में शवारी ताल 8 मात्रिक अथवा 7 मात्रिक बजाने का प्रचलन है। करियाला लोक नाट्य में चौदह मात्रिक ताल, 'बधाई' में 28 मात्रिक ताल बजाए जाने की परम्परा है जो शहनाई वादन तथा ढोल-नगारा पर बजाया जाता है। इनके अतिरिक्त विभिन्न आयोजनों एवं उत्सवों में बेऊल, पुजावणी ताल, अन्द्रेड़ा ताल, नौगत आदि ताल विभिन्न लयकारियों में बंधे रहते हैं।

ठोडा अथवा रचेवला ताल: यह बारह मात्रिक ताल ढोल-नगारा वाद्यों पर बजाई जाती है। बोल कुछ इस प्रकार हैं:-

धा ऽगधा धा गिना । धा धा धा ना धा ऽगधा

यहाँ प्रचलित म्हारे बीगुए जाणा विशु बोलो देखणे रा हामो चाव तथा ओरो दे मेरो डांगरू, डांगरू भाई डांगर इत्यादि बोलों में ठोडा नामक लोक नाट्य गीतों के साथ उपर्युक्त ताल बजाते हैं। शहनाई तथा करनाल वाद्यों की संगति इन गीतों में वीर रस का आभास कर देती है।

अनिबद्ध शैली के लोक गीत

अनिबद्ध अर्थात् (ताल रहित) प्रकार के गीत विवाहोत्सव में गाए जाते हैं तथा अन्य गीत खेत-खलिहान, जंगल में पशु चराते, घास काटते, लकड़ी काटते हुए एकल अथवा युगल स्वरों में सुने जा सकते हैं। इन गीतों में भूरी, लामण इत्यादि गाए जाते हैं। ये गीत प्रायः ऊंची आवाज में गाए जाते हैं जो दूर-दूर तक सुनाई देते हैं। कभी-कभी भूरी गीतों में नायक-नायिका के सवाल-जवाब की झड़ी-सी लग जाती है जिनमें हृदयगत प्रणय सम्बन्धी मनोभावों की अनूठी अभिव्यक्ति होती है जो लोक साहित्य का अनुपम रूप प्रकट कर देती है।

नायक: दूरो दा देखियो बे रे, तेरे घोरो रा जान्दा ।

होरो बातो जाओ विसरी, भूरीए तेरा साईसा नि जान्दा ॥

भावार्थ : प्रिये ! जब भी तुम्हारे घर के नजदीक से गुजरता हूँ तुम्हारे घर के दरवाजे में ताला लटका दिखाई देता है। क्या करूँ अन्य सब बातों को भूला भी दूँ परन्तु तुम्हारी मधुर याद दिन-रात मन को सालती रहती है, मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता।

नायिका : बाटो बटो ऊआ आज खोड़िया रखोड़ा ।

एक शाबुआ घोरो रा । पापिया दूजा दूलक तेरा ॥

भावार्थ : इन पंक्तियों में नायिका अपने प्रियतम को लक्ष्य करके कहती है कि हे पथिक ! कम से कम एक क्षण भर के लिए ही अपना मुख दिखा जाना। एक तो मुझे घर का बहुत काम है, दूसरे तुम्हारी याद मुझे निरन्तर सताती रहती है। अत्यन्त उद्वेग में वह अपने प्रियतम को 'पापी' तक कह देती है।

वस्तुतः भूरी गीतों में प्रणय सम्बन्धी द्विपदी पंक्तियाँ लोकसाहित्य की पराकाष्ठा को उजागर करती मन पर अमिट छाप छोड़ देती हैं। प्रणय मानव मन की एक शाश्वत वृत्ति है जिसके मूल में रागात्मक वृत्ति की प्रधानता होती है। जन्म से मरण तक प्रेम विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। मानव मन स्वभावतः यौवन परिकल्पनाओं से परिपूर्ण रहता है जिसे प्रेमी-प्रेमिका अपनी लयात्मक वाणी द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। अनिबद्ध श्रेणी के अन्तर्गत शिशु गीत, ऋतु गीत व खेल-खिलौने सम्बन्धी पंक्तियाँ सस्वर सुनी जाती हैं जिन्हें घर की बूढ़ी स्त्रियाँ किसी ताँबे या काँसे की वस्तु पर छड़ी की हल्की चोट मारने के साथ गुनगुनाती रहती हैं।

निष्कर्ष

धन्य हैं वे लोक साहित्य व लोक संगीत के सर्जक, जिन्होंने अपने सामूहिक प्रयासों से, मौखिक रूप में अनगिनत पड़ावों को पार कर पीढ़ी दर पीढ़ी, अभी तक, इस अमूल्य धरोहर को हमें सौंपा है। हम सभी कला प्रेमी एवम् लोक संगीत के पक्षधर लोगों का दायित्व है कि हमारे आराध्य देव

शिरगुल महाराज व माँ रेणुका की पावन धरा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास करें, इसके संरक्षण के उपायों को खोजें ताकि प्रकृति प्रदत्त मनोहारी जनपद अपना नाम सार्थक करता हुआ, अपनी विशिष्टताओं को सहेजता हिमाचल का सिरमौर बना रहे।

संदर्भ ग्रन्थ

जोशी, उमेश. भारतीय संगीत का इतिहास. फीरोजाबाद (उ.प्र.): मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, 1969.

वीर, राम अवतार. भारतीय संगीत का इतिहास (भाग 1-2). नई दिल्ली: राया पब्लिकेशन्स, 1996.

गौतम, अनीता. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग. नई दिल्ली: कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, 2002.

राजश्री. सांस्कृतिक शिक्षा के उद्विकास में संगीत का योगदान. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण, 2003.

भरतमुनि. नाट्यशास्त्रम्. दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन.